अल्फा पीढ़ी के लिए स्वास्थ्य

बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज़ में बच्चों का स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती (ख़ुशहाली)

आदर्श डे केयर

पेज 7

"सभी बड़े कभी बच्चे थे लेकिन उनमें से कुछ ही इसे याद रखते हैं" - एंटोआन डे सेंट-एक्सुपेरी, द लिटिल प्रिन्स

बच्चे समय की वास्तविकता के साथ-साथ मासूमियत का भाव भी लाते हैं। यदि हम अपनी अगली पीढ़ी का पोषण करने में विफल रहते हैं, तो हम उन्हें एक ऐसी धरती के साथ छोड़ देंगे जो घर नहीं है, लेकिन एक अजीब सी भूमि है जिसमें उन्हें जीवित रहने के लिए लड़ना होगा। यह न्यूज़लेटर इस बात पर प्रकाश डालता है कि BHS क्या कर रहा है, इन फलते-फूलते जीवन को पोषित करने के एक विनम्र प्रयास के रूप में।

विषय सूची

पेज	विषय
3	**पस्मी**
4	छिपे हुए घरों की ओर
6	फूलों का बिस्तर
7	आंगनवाड़ी
9	युवा और हम
11	प्रकाशन
11	**संख्याएँ**

"बच्चे अपने बड़ों की बात सुनने में कभी बहुत अच्छे नहीं होते, लेकिन वे उनकी नकल करने से कभी नहीं चूकते।"
-जेम्स बाल्डविन

विशेष

डॉ पवित्र मोहन द्वारा कविता

पेज 12

पस्मी

जग्गी, वरिष्ठ स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा लिखित

लोकिसरी नामक गांव से पस्मी (17 महीने की) बेहद कमजोर महसूस करते हुए हमारे क्लिनिक में आई। जांच करने पर पता चला कि उसे मलेरिया था और खून की कमी भी थी। उसे मलेरिया की दवा दी गई और घर ले जाया गया। लेकिन उसका बुखार 3 दिन तक कम नहीं हुआ। इसके बाद उसके परिजन उसे एक झोलाछाप डॉक्टर के पास ले गए, जिसने उसे इंजेक्शन लगा दिया।

इस फैसले का नतीजा यह था कि उसे इंजेक्शन लगाई हुई जगह पर चोट लगने के साथ-साथ एक गंभीर एलर्जीक रीएक्शन विकसित हो रहा था।

पस्मी के परिवार ने फिर से हमारे क्लीनिक आने का फैसला किया। इस बार वह पैर में गंभीर चोट के साथ आई थी। उसके ठीक होने के लिए अगले चरण महत्वपूर्ण थे। डॉ. गार्गी ने हमें सलाह दी और फिर हमने उसे टरशरी अस्पताल में रेफर कर दिया। उन्हें रेफरल कार्ड और अमृत सपोर्ट दिया गया। ऑपरेशन से ठीक होने (रिकवरी) के लिए पस्मी को एक महीने से अधिक समय तक अस्पताल में भर्ती रखा गया था।

पस्मी का परिवार उम्मीद लेकर हमारे पास लौटा। आज, वह स्वस्थ दिखती है। वह चल सकती है। उन्होंने हमें यह कहकर धन्यवाद दिया, "यदि आप न होते, तो हमारी बच्ची मर जाती।"

हमारे समुदाय ऐसे कई बच्चों को देखते हैं जो बीमार पड़ जाते हैं और खराब स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करते हैं या बिल्कुल भी कोई सेवा प्राप्त नहीं करते हैं। माता-पिता को भरोसा करने में कुछ समय लगता है क्योंकि उनके दिल में अपने बच्चों का हित होता है और वह अपने बच्चों के लिए वही चाहते जो उनके लिए सबसे बेहतर हो। पहले विचार पर, नीम-हकीमों द्वारा प्रदान किए गए कोर्स के माध्यम से महसूस की गई तत्काल राहत को सबसे आदर्श माना जाता है। हालाँकि, पस्मी जैसी कहानियाँ, वैसे तो चिंताजनक हैं, लेकिन वे देखभाल के लिए सही स्रोतों तक पहुँचने के लिए एक मिसाल कायम करती हैं। प्रत्येक बच्चे को एक वयस्क की तरह ही गरिमापूर्ण गुणवत्ता-संचालित स्वास्थ्य सुविधाएं प्राप्त करने का अधिकार है। AMRIT क्लिनिक्स की उपस्थिति स्वास्थ्य के उनके मूल अधिकार को प्रदान करती है।

छिपे हुए घरों की ओर

रवि, नर्स मेंटर द्वारा लिखित

गमेती फला नामक फला में होम विज़िट के रास्ते में, हम इंदिरा के घर पहुँचे। हम एक खुला आंगन देख सकते थे जिसमें छोटी बच्ची खाट पर सो रही थी। आसपास कोई नहीं था, हवा एकदम शांत थी।
घर पर कोई है या नहीं, ये देखने के लिए हमने आवाज़ लगाई, तभी उसकी मां नजर आई। उनसे बातचीत करने के बाद उन्होंने खुलासा किया, "मेरी बेटी 4 दिनों से बीमार है, मुझे नहीं पता कि क्या करूं।”

हमने परिवार को सलाह दी कि वे हमें तुरंत PHC में मिले। हमने आवश्यक जाँच पूरी की और पता चला कि बेबी इंदिरा कुपोषित है। हमने मां को परामर्श देने (काउन्सलिंग) की अपनी मानक प्रक्रिया का पालन किया और बच्चे को पौष्टिक आहार खिलाने की तकनीकों का प्रदर्शन किया। इंदिरा को हमारे द्वारा खिलाए जा रहे पोषण पैकेट को खाने के लिए उत्सुक देखकर उन्हें राहत महसूस हुई।
जब वे दो दिनों के बाद हमारे पास लौटे, तो उन्होंने बताया कि कैसे इंदिरा ने पोषाहार के तीन पैकेट खिचड़ी और कुछ सब्जियों के साथ खत्म कर दिए।

एक शांत, बल्कि एकांत घर में एक अनियोजित, साधारण होम विज़िट ने एक जीवन को बिना किसी निशान के धीरे-धीरे गायब होने से बचाया। जब माताएँ असहाय महसूस करती हैं, तो उन तक मदद पहुंचना हमारा कर्तव्य है। और हमारे बच्चों को उनके बढ़ते वर्षों में सही मात्रा में भोजन खिलाना। इंदिरा और उसकी मां एक जोड़ी है जिन तक हम पहुंचे।
हमारी नर्सें, हेल्थ वर्कर्स, स्वास्थ्य किरणें, आशाएं प्रसवोत्तर देखभाल (पोस्ट नेटल केयर), बीमार बच्चों के फॉलो-अप और परिवार की प्रोफाइलिंग के लिए हर महीने कई सौ होम विज़िट्स करती हैं।

पस्मी

होम विज़िट के दौरान इंदिरा

देखभाल के बाद इंदिरा...

फूलों का बिस्तर

भेरू (पोषण सुपरवाईज़र) और लोगरी (फुलवारी वर्कर) द्वारा लिखित

मानपुर अमृत क्लिनिक से 5 किमी दूर घटर फला नामक एक उपग्राम में, हमें एक आवश्यकता महसूस हुई। उनके पास वहां फुलवारी नहीं थी, आंगनवाड़ी तो दूर की बात है। बच्चे लापरवाही और देखभाल की कमी का सामना कर रहे थे। उनमें से ज्यादातर कमजोर, कुपोषित और बीमार थे। इसके साथ ही बच्चों के पास की नदी में गिरने का लगातार खतरा बना रहता था। यहां बच्चों की देखरेख के लिए एक कार्यवाहक (देखभाल करने वाले) की उपस्थिति की एक स्पष्ट प्रासंगिक आवश्यकता थी। पुरुषों के काम के लिए बाहर जाने के कारण माताओं पर पहले से ही बहुत सारी ज़िम्मेदारियों का बोझ था जैसे कि उनके खेतों, मवेशियों की देखभाल करना, खाना बनाना, जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करना और भी बहुत कुछ। अधिकांश दिनों में, इन दैनिक कार्यों में से कई को एक-दूसरे के खिलाफ तौला जाना चाहिए क्योंकि कोई एक इंसान संभवतः पूरी सावधानी से कितना काम संभाल सकता है?

यहां के परिवार अपनी बिगड़ती आर्थिक स्थिति के भी शिकार थे। ऐसे हालातों के बीच, बच्चों की देखभाल (चाइल्डकेयर) और पोषण आवश्यक कार्यों में नहीं गिने जा रहे थे (ने बैकसीट ले ली थी)।

BHS ने इस समुदाय के सहयोग से यहां एक डे केयर सेंटर स्थापित किया है। बच्चों को अब दिन में तीन बार गर्म पौष्टिक भोजन दिया जाता है, उनकी देखभाल की जाती है और उन्हें हाथ धोने जैसी आदतें सिखाई जाती हैं। वे कविताएँ सुनाते हैं और बड़े बच्चे संख्या, अक्षर पढ़ते हैं और कहानी की किताबों के माध्यम से चित्रों की पहचान करते हैं। वे खेल खेलते हैं, उन्हें एक ही फला से ताल्लुक रखने वाली दो फुलवारी वर्कर्स की देखरेख में सुरक्षित और दिमाग़ी तौर पर एक्टिव (stimulated) रखा जाता हैं। बच्चों के स्वास्थ्य पर नजर रखने के लिए हर तीन महीने में उनका वजन किया जाता है।

इस फुलवारी के खुलने से कई गैप भर गए, बच्चों को दूसरा सुरक्षित, पालन-पोषण का घर मिला है, माताओं को अपने दैनिक कार्यों को करने में कुछ राहत महसूस हुई और एक ही समुदाय की दो महिलाओं के पास आय का एक स्थिर स्रोत है। माता-पिता के साथ मासिक बैठकों (मीटिंग्स) के माध्यम से, हम यह भी सुनिश्चित करते हैं कि समुदाय और हमारे बीच संबंध बना रहे, जबकि ज्ञान का लगातार आदान-प्रदान होता रहता है।वे एक साथ समाधान खोजने के लिए हमें उनकी कुछ चुनौतियों के बारे में अपडेटेड रखते हैं, जबकि हम बीमारियों के बारे में जानकारी देते हैं, सभी को कुछ तेज़ी से बढ़ने वाली बीमारियों के लिए पहले से ही तैयार करते हैं, उदाहरण के लिए, यदि मलेरिया निकट है, तो हम रोकथाम के तरीकों की आवश्यकता को पुनः स्थापित करते हैं।

"इस फुलवारी का अस्तित्व मेरे बच्चे की स्वच्छता और पोषण का ख्याल रखता है लेकिन इसके अलावा, मैं भी अपने बच्चे को देखकर इन बारीकियों को सीखती हूं। पालन-पोषण (पेरेंटिंग) के बारे में भी" - फुलवारी माता-पिता की बैठक (मीटिंग) में एक माँ।

आंगनवाड़ी

रमेश, वरिष्ठ स्वास्थ्य कार्यकारी (सीनियर हेल्थ एक्ज़ीक्यूटिव) द्वारा लिखित

एक आंगनवाड़ी है, जहां जन्म से लेकर पांच साल तक के बच्चों को पूरे 7 घंटे प्यार, देखभाल और ख़ास देखरेख मिलती है। मैंने इस जैसा कोई और नहीं देखा। तो आइए देखें कि आसपुर ब्लॉक की यह आंगनवाड़ी इतनी अलग क्यों है।

पचलसा बड़ा गांव में है। यहीं पर आशा वर्कर माया गर्ग, आंगनबाड़ी वर्कर विमला गर्ग और सहयोगी नाथी देवी मिलकर काम करती हैं। उनके केंद्र ने स्वच्छता, पोषण और जुड़ाव के उच्च मानकों (स्तर) को बनाए रखा है।

विमला ने कहा, "हर बच्चे को सही तरीके से विकास और बढ़ने के अवसर मिले, यही मेरा उद्देश्य है। इसके साथ मैं चाहती हूं कि मेरे बच्चे अच्छी तरह से पढ़ाई करें, पर्याप्त खेलने के समय के साथ नियमित पौष्टिक भोजन करें।”

मां को सभी चीज़ों से अवगत रखते हुए विमला हर बच्चे के ग्रोथ चार्ट को बनाए रखती (मेंटेन) है। वह विभिन्न व्यंजनों के माध्यम से बच्चों को घर से आवश्यक पोषण मिलने के बारे में प्रत्येक बच्चे की मां को काउन्सिल करती हैं। इस केंद्र पर माता-पिता के संपर्क नंबरों के साथ-साथ प्रत्येक बच्चे का नाम और जन्मतिथि लिखकर एक चार्ट पर सजाया जाता है। आशा माया इस केंद्र का बार-बार विज़िट करती हैं, वह यह सुनिश्चित करती हैं कि हर बच्चा स्वस्थ है। वह बच्चों के साथ बैठने और सक्रिय रूप से जुड़ने के लिए कहानियों और कविताओं की एक किताब के साथ आती हैं। जब कुछ खाद्य उत्पादों की आवश्यकता होती है, तो वे बच्चों को खिलाने के लिए अपने घरों से तेल और चीनी लाने से पहले दो बार भी नहीं सोचते हैं। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक बच्चा गलीचे पर बैठे, कुछ जो उनके अपने हाथों से बने हैं, और जिम्मेदारी से बच्चों को प्रत्येक खिलौने की भूमिका समझाते हैं। इस केंद्र पर मौजूद हर खिलौना स्वयं वर्कर्स ने बनाया हैं। यह जगह एक आभा रखती है जहां हर ANC मां का सम्मानपूर्वक स्वागत किया जाता है। मैंने उन्हें माँ के बैठने के लिए पानी और कुर्सी लाते देखा है, साथ ही दया और सहानुभूतिपूर्वक उनका हालचाल पूछते हुए भी देखा है। यह संस्कृति (कल्चर) कुछ ऐसी है जिसे मैंने कहीं नहीं देखा। इस केंद्र पर हर बच्चे का पूरा टीकाकरण होता है, यहां कोई भी बच्चा कमजोर या कुपोषित नहीं है। जब बच्चा छह साल का हो जाता है, तो वे सुनिश्चित करते हैं कि पास के स्कूल में बच्चे की प्रवेश प्रक्रिया पूरी हो जाए। इस केंद्र पर इन तीन महिलाओं ने समुदाय में बहुत बड़ा बदलाव किया है।

यह एक ऐसा आदर्श आंगनवाड़ी केंद्र है जहां तीन महिलाओं द्वारा एक साथ किए गए कार्य का कोई मूल्य नहीं है (अमूल्य है)। उन्होंने एक उदाहरण पेश किया है कि कैसे समर्पण और प्रेम के साथ हम अगली पीढ़ी के लिए स्वस्थ रूप से बढ़ने (ग्रोथ) और विकास के लिए जगह बना सकते हैं।

विमला, माया और नाथी जैसी महिलाएं समुदाय की ताकत हैं।

आपको ले जा रहा है

इसके अंदर

प्यारी आंगनवाड़ी...

युवा और हम

वानिया, इंडिया फेलो द्वारा लिखित

दक्षिणी ग्रामीण राजस्थान में सबसे अधिक छात्र ड्रॉपआउट दर 8वीं कक्षा से शुरू होती है। अधिकतर मामलों में, लड़कियां मासिक धर्म शुरू होने के बाद स्कूल छोड़ देती हैं और लड़कों को अपने परिवार के लिए कमाई शुरू करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इसके अलावा, ऐसे दूरस्थ विद्यालयों में स्वास्थ्य संबंधी विषयों को सूक्ष्मता से छुआ नहीं जाता है, जिससे ट्यूबरकुलोसिस, कुपोषण, निमोनिया, एनीमिया पर बहुत महत्वपूर्ण चर्चाएँ पीछे छूट जाती हैं, जो सभी उनके क्षेत्रों में अत्यधिक फैलती हैं।

ऐसे मुद्दों का समाधान करने के लिए, हम निवारक और प्रोत्साहक तरीकों के इर्द-गिर्द सामुदायिक बैठकें (मीटिंग्स) आयोजित करने पर गंभीरता से काम करते हैं। हमारे सामुदायिक बैठकों के दौरान आम तौर पर वयस्क हमारे साथ बातचीत में शामिल होते हैं। यह लोगों के एक महत्वपूर्ण समूह को छोड़ देता है - युवाओं को। स्कूल स्वास्थ्य शिक्षा पहल, हमारे द्वारा अपनाया गया, एक ऐसा स्थान है जहाँ बच्चों को स्वास्थ्य के बारे में, व्यक्तिगत (स्वच्छता, भोजन की आदतें, व्यायाम) और सामुदायिक स्तर (फैलने वाली/कम्यूनिकेबल और गंभीर बीमारियों), दोनों पर सही जानकारी प्रस्तुत की जाती है। इस कार्यक्रम की सुंदरता इसके पाठ्यक्रम और प्रस्तुति की शैली में है। हम वीडियो, फोटो, स्किट, एक्ट (नाटक), रोल-प्ले और उदार मात्रा में बातचीत का उपयोग करते हैं।

हमने सबसे पहले अमृत क्लीनिक के सबसे नज़दीकी स्कूलों की पहचान की और कक्षा 7 से 9 के बीच के बच्चों के साथ द्वि-मासिक सत्र शुरू किया। हमने गोगुन्दा क्षेत्र के 2 स्कूलों में 8 कक्षाएं पूरी कर ली हैं और हम सलूम्बर में भी इसका विस्तार करने की योजना बना रहे हैं - 3 और स्कूलों को जोड़ रहे हैं।

प्रत्येक सत्र (सेशन) में औसतन 50 बच्चे उपस्थित होते हैं। सत्र (सेशन) बीतने के साथ ही बच्चों की संख्या बढ़ती जाती है। "दीदी आप कब आओगे?" हमारे जाने से पहले उनमें से अधिकांश बच्चे हमसे पूछते हैं। इस कार्यक्रम ने इस धारणा को भी तोड़ दिया है कि 'बच्चे सीखना नहीं चाहते हैं' या 'वे बहुत आलसी हैं', मूल रूप से शिक्षा में उनकी अरुचि के लिए उन्हें दोषी ठहराया जाता है। जब आप बच्चों का सम्मान करते हैं, उनके साथ जुड़ते हैं, उनके साथ खेलते हैं, उन्हें क्षमा करते हैं और उन्हें गलतियाँ करने देते हैं, तो वे आपके पास आते हैं, वे आपकी बात सुनते हैं, और आप उन्हें जो सिखाते हैं उसका पालन करते हैं।

इस कार्यक्रम ने हमें दिखाया कि कैसे हर बच्चा विशेष रूप से ऐसे दूरस्थ स्थानों में प्रोत्साहन और सम्मानजनक प्रामाणिक शिक्षा के लिए तरस रहा है।

सरकार ने आयुष्मान भारत के तहत स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम (2018) पर ओपरेशनल दिशानिर्देश शुरू किए हैं, लेकिन हमारे क्लीनिक के आसपास के स्कूलों में अभी तक सेवाएं नहीं पहुंची हैं। अपने कार्यक्रम की नींव का निर्माण जारी रखते हुए, हम भविष्य में सरकार के साथ सहयोग करके इस काम को करने की उम्मीद करते हैं। यह हमें किशोरों के बीच सही जानकारी प्रदान करने और उनकी ख़ुशहाली (well-being) को बढ़ावा देने के उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम बनाएगा।

स्कूल स्वास्थ्य सत्र (सेशन) चलते हुए, रावच

इस पाठ्यक्रम को डिजाइन करने और साझा करने के लिए, के सी पट्टे का हार्दिक आभार।

प्रकाशन

जलवायु परिवर्तन नवजात स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित कर रहा है?

इस वर्ष, राजस्थान में तापमान 45 से 48 डिग्री सेल्सियस तक उच्च दर्ज किया गया। हाइपोथर्मिया कई शिशुओं की मृत्यु का एक मूल कारण है, लेकिन नवजात मृत्यु दर के कारण के रूप में हाइपरथर्मिया की सीमित मान्यता है।

हम इस लेख में दो नवजात शिशुओं को उनके नैदानिक विवरण और परिणामों के साथ प्रस्तुत करते हैं, हम एक ऐसा मार्ग भी तैयार करते हैं जिसके माध्यम से वैश्विक जलवायु परिवर्तन ग्रामीण और आदिवासी समुदायों में नवजात शिशुओं के कल्याण और उत्तरजीविता को प्रभावित करता है।

पढ़ने के लिए यहाँ क्लिक करें

पवित्र मोहन, गार्गी गोयला और सुरभि संजय द्वारा लिखित

विज्ञान में महिलाओं की भूमिका का जश्न मनाने के लिए विशेष रूप से बनाई गई 3 मिनट की फिल्म
इसे यहां देखें!

संख्याएँ

हमारे सात प्राथमिक देखभाल केंद्रों का डेटा

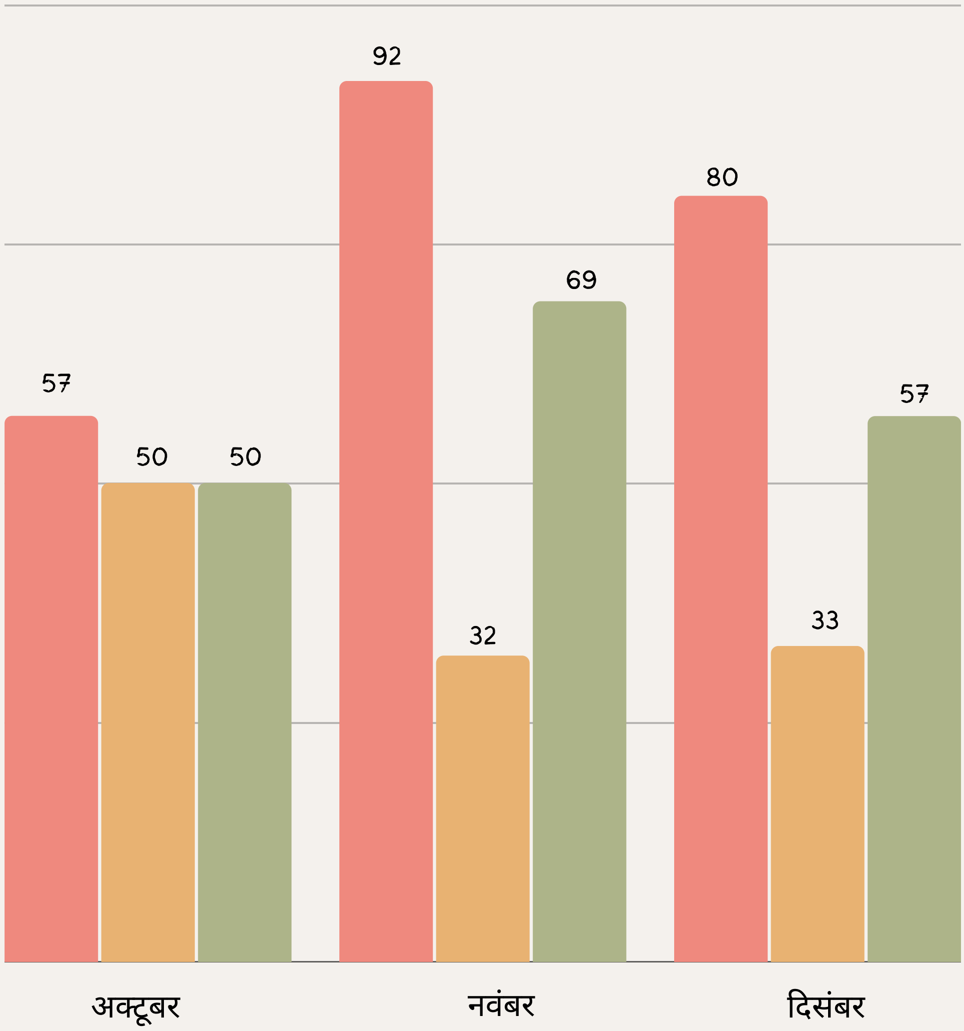

नए टीबी मरीज़

नए SAM मरीज़

सुरक्षित संस्थागत प्रसव

इस तिमाही (क्वॉर्टर) में

हमारे क्लीनिकों में कुल आए मरीजों का आँकड़ा (फुटफॉल) 19,690 था।

ग्रोथ मॉनिटरिंग के माध्यम से 3 वर्ष से कम आयु के 1591 बच्चों तक पहुँचा गया।

SAM से 60 बच्चे ठीक (रिकवर) हुए

56 कम वजन के शिशुओं को कंगारू मदर केयर (केवल PHC) प्राप्त हुआ

हमारे फुलवारीयों से 314 बच्चों की देखभाल हुई।

355 माताओं और नवजात शिशुओं को घर पर प्रसवोत्तर देखभाल (पोस्ट-नेटल केयर) प्राप्त हुई।

यही जीवन है (C'est la vie)

पवित्र, संस्थापक BHS द्वारा लिखित

जीवन जो दे रहा है उसका आनंद लो, मेरे दोस्तों,
धूप और रेत की यात्रा करो, दूर देशों के व्यंजनों का स्वाद चखो,
आज और कल के शानदार शो (नज़रों) देखों।
ज्ञान और दूरस्थ राज्यों (साम्राज्यों) की पुस्तकें पढ़ो,
अपने क्षितिज का विस्तार करो, अपने पंख फैलाओ और मज़े करो।

हालांकि एक पल निकलो (मज़ाक़ का कोई इरादा नहीं है),
और जानो की ऐसे पुरुष और महिलाएं भी हैं जो रात को भूखे सोते हैं,
शरीर से दुबले-पतले, अब और नहीं लड़ सकते हैं

उनकी रगों में थोड़ा खून, और उनके पेट में भोजन है
महिलाएं पानी और जलाऊ लकड़ी लेने के लिए मीलों पैदल चलती हैं।
इस कठिन परिश्रम से कभी आराम नहीं मिलता, इसे कभी समझा नहीं जाता,
भाग्य के सामने आत्मसमर्पित किए हुए; भूखे, मुरझाए और टूटे हुए,
हम उठे है हमारी नींद से लेकिन, हम कभी नहीं जागे

तो मेरे दोस्तों, जीवन जो कुछ भी दे रहा है उसका आनंद लो,
धूप और रेत की यात्रा करो, दूर देशों के व्यंजनों का स्वाद चखो,
लेकिन अपने आप को हमेशा प्रसिद्ध और अमीर लोगों से न घेरो
और अपनी गर्दन को प्रस्सिद्ध शुतुरमुर्ग की तरह दफनाओ।
लाखों लोगों की दुर्दशा उपेक्षा से नहीं मिटेगी,
या बात करने और सोने और खर्राटे लेने (चाहे कितना भी जोर से क्यों न हो) से भी नहीं मिटेगी।

वे वही डर और वही खुशियाँ साझा करते हैं,
उन्हें भी वही प्यार, वही देखभाल चाहिए।
वे चाहते है की लोग उन्हें देखें, सुनें और समझें,
इसलिए उठो और वह करो जो तुम कर सकते हो।
उन्हें देखो, सुनो और समझने की कोशिश करो।

वे इसी देश में, इसी ज़मीन पर रहते हैं।

हमारा सहयोग करने के लिए

।यदि आप हमारे काम में आर्थिक रूप से सहयोग देना चाहते हैं, कृपया क्लिक करें

DONATE

या
आप अपना दान यहां भेज सकते हैं:
बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज़ ट्रस्ट
खाता संख्या: 35576504978
IFSC कोड: SBIN0005887
शाखा: स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,
ADB बड़गांव, उदयपुर
(प्राप्त सभी दान आयकर अधिनियम, भारत की धारा 80 जी के तहत कर मुक्त हैं)

यदि आप हमारे साथ स्वेच्छा से काम करके हमारे काम को सपोर्ट करना चाहते हैं:
कृपया हमें यहां ईमेल करें
hr@bhs.org.in

आप हम तक यहां पहुंच सकते हैं:
बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज़
39, कृष्णा कॉलोनी, खान कॉम्प्लेक्स के पास,
बेदला रोड, महावीर कॉलोनी पार्क,
उदयपुर, राजस्थान 313001
+91 294 245 3392
https://bhs.org.in

हमारे सोशल मीडिया प्रोफ़ाइल देखें!